इकाई 4 प्रतिवर्तता*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 गोल्डनर और स्वतुल्यता

4.3 गार्फिंकः नृजातियप्रणाली के माध्यम से संवेदनशीलता एवं सजगता

4.4. बॉर्डियूः प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी)

4.5. सारांश

4.6. शब्दावली

4.7 संदर्भ

4.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई को पढ़कर आपके लिए संभव हो पायेगाः 'स्वतुल्यता (रिफ्लेक्सिविटी) के अर्थ को समझना 'स्वतुल्यता (रिफ्लेक्सिविटी) सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में कैसे उपयोगी है। ए.गोल्डनर, एच. गारफिनकेल और पी. बॉरडियू के कामों की मदद से सजगता एवं संवदेनशीलता (रिफ्लेक्सिविटी) के अर्थ और महत्व को समझना।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

(रिफ्लेक्सिविटी) वह प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्ता और शोधकर्ता डेटा के संग्रह और व्याख्या की प्रक्रिया को दर्शाता है तथा प्रतिबिंबित करता है। प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिविटी) की परिभाषा का विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग अर्थ है। यह एक ऐसा शब्द और परिभाषा है जो इंद्रियों की विस्तृत विविधता में उपयोग किया जाता है। सामान्य तौर पर, इसका अर्थ होता है 'प्रतिबिंबित करना' या 'दर्शाना' और प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिविटी) विशेष रूप से, सामाजिक अनुसंधान के भाग एवं हिस्से के रूप में, वह प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा शोधकर्ता डेटा के संग्रह और व्याख्या की प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करता है। टैल्कॉट पार्सन्स, एंथोनी गिडेंस, हेरोल्ड गार्फिकल ने अपने कामों में इस अवधारणा का (कॉन्सेप्ट) उपयोग किया है। इस शब्द के दो बहुत महत्वपूर्ण उपयोगों की पहचान की जा सकती है। इसका उपयोग आधुनिक सामाजिक जीवन की सामान्य विशेषताओं को चित्रित करने के लिए किया जाता है और दूसरी बात यह है कि इसका उपयोग सामाजिक जीवन की व्याख्या करने, विशेष रूप से सामाजिक वैज्ञानिकों की कुछ विशेषताओं का उल्लेख करने एवं समझाने के प्रयासों के लिए किया जाता है (देखेंः कुपर और कुपर, 1996)।

प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिविटी) शब्द का आविष्कार एल्विन गोल्डनर द्वारा किया गया था, जो समाजशास्त्र की समाजशास्त्र संबंध में परीक्षा चाहते थे। तथाकथित और प्रतिवर्त (रिफ्लेक्सिविटी) समाजशास्त्र हेतू एक बहुत ही ठोस, महत्त्वपूर्ण एवं संपूर्ण प्रमाण, दलील और आलोच्य विषय गॉल्डनर के लेख 'द कमिंग क्राइसिस ऑफ वेस्टर्न सोशियोलॉजी (1970)' में पाया जाता है। वह और नृजातीय प्रणाली के सैद्धांतिक संदर्भों तथा प्रस्तावित प्रतिवर्तित समाजशास्त्र की सीमाओं से भी परे पहुँच गये। समाजशास्त्र को एक विषय

* डॉ. बीनू सुंदास द्वारा लिखित

के रूप में देखा गया था जो सामाजिक वास्तविकता के एक वस्तुनिष्ठ ज्ञान की उत्पत्ति करने और प्रस्तुत करने के लिए तैयार था, मगर जिस पर कोई सहमति नहीं बनी थी। इसलिए, उन्होंने तर्क दिया कि ज्ञान ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं होता है और समाजशास्त्र आंतरिक रूप से उस राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ से जुड़ा हुआ होता है जिसके भीतर वह विद्यमान होता है। इसलिए, उसके लिए यह महत्त्वपूर्ण था कि जिस तरह से हम अपने आपको और अपने भविष्य को देखते हैं, इसमें समाजशास्त्र की भूमिका के बारे में और इस संबंध के बारे में जागरूक हो। प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्टिव) सोशियोलॉजी में हमें वास्तव में हमने यह जांचने की आवश्यकता होती है कि हम क्या कर रहे हैं, हम कैसे सोचते हैं, हम कैसा महसूस करते हैं, सामाजिक दृष्टिकोण में किसी विशेष चीज के बारे में हमारा दृष्टिकोण, विश्वास, भावनाएं क्या हैं और अगर हम वास्तव में अपने स्वयं के विचारों पर संदेह होने के इस विचार को समझ लेते हैं तो अन्य लोगों के व्यवहार के बारे में पूर्व धारणा से छुटकारा पाने में हमें मदद मिल जाती है।

4.2 गॉल्डनर और प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिविटी)

गॉल्डनर उस तरीके पर प्रकाश डालना चाहते हैं जिसमें सिद्धांत उत्पाद (थ्योरी प्रॉडक्ट्स) और सिद्धांत कार्यनिष्पादन (थ्योरी परफॉर्मेंस) उत्पन्न होते हैं और प्राप्त होते हैं। सिद्धांतकारों और पद्धतिविदों ने सिद्धांत के निर्माण के लिए, सिद्धांत और अनुसंधान के बीच अन्तर्क्रिया पर जोर दिया लेकिन गोल्डनर की अवधारणा उनसे बिल्कुल अलग है। उनका तर्क है कि यह समझना असंभव है कि सामाजिक सिद्धांत वास्तव में कैसे बना है या यह दुनिया में अपना रास्ता कैसे बनाता है (देखें: गॉल्डनर 1970)। उनका मत है कि एक शोधकर्ता की उपस्थिति वास्तविकता को बदल देती है। शोधकर्ताओं ने जिस वस्तुनिष्ठता की बात की है वह उनके मूल्यों और उनके औचित्य पर आधारित होती है और यह वास्तविकता को वैसे सामने प्रस्तुत (प्रोजेक्ट) करती है जिस तरह से शोधकर्ता इसे देखना चाहते हैं। इसलिए ज्ञान कभी भी ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं हो सकता। संचार सिद्धांत बहुत जटिल होता है और इसे तभी समझा जा सकता है जब हम विभिन्न तरीकों को समझने में सक्षम हैं जिसमें सिद्धांतकार ने खुद को उनके सिद्धांतों में रखा गया है।

सामाजिक सिद्धांतकार कुछ तथ्यों को अपने ध्यान में इसलिए रखते हैं क्योंकि ये तथ्य शोध के बजाय उनके अनुभव से उत्पन्न हुए होते हैं। तथ्यों की विश्वसनीयता उनके लिए समस्याग्रस्त नहीं होती है। तथ्यों को निर्धारित करना ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि इन तथ्यों को क्रमबद्ध करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। "सामाजिक सिद्धांत, तो, अक्सर व्यक्तिगत रूप और वास्तविक अर्थ की एक खोज होते है, जिन्हें पहले से ही व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से जाना लिया जाता है" (देखें: गोल्डनर, 1970: 484)। इसलिए, यह इस बात का पता लगाने और उस अर्थ की व्याख्या करने और एक सामाजिक घटना या प्रक्रिया के बीच तनाव को कम करने का एक प्रयास होता है कि किसी ने क्या किया है, किसी ने जिन्दगी को कैसे जिया हैं जो सिद्धांतकार वास्तविक समझता है और कुछ मूल्य, जो इसका उल्लंघन करते हैं।

सामाजिक सिद्धांतकार के लिए दो प्रकार के सामाजिक संसार होते हैं 'अनुमत या प्रमाणित' और 'गैर अनुमत या अप्रमाणित'। सिद्धांतकार अप्रमाणित को प्रमाणित दुनिया में बदलने की कोशिश करता है और इसलिए अप्रमाणित या अनपेक्षित को खतरा हो जाता है और अनुमति या प्रमाणित मजबूत हो जाते है। सिद्धांतकार ऐसा दो तरीकों से करते हैं: 1) सामान्य दुनिया के महत्व या सामर्थ्य का प्रचार करके, 2) सामर्थ्य और मूल्यों को

अस्वीकार या अनदेखा करके जिसे वह एक अप्रतिष्ठित और बिना अनुमति की दुनिया मानता है। सामाजिक वस्तुओं के अर्थ खोजने और आबंटित (असाइन) करने के प्रयास के साथ साथ सामाजिक सिद्धांत वस्तुओं को उनकी शक्ति और अच्छाई के संदर्भ में भी पता लगा रहे हैं। एक मूल्य मुक्त सामाजिक सिद्धांत में यह एक गुप्त तरीके से किया जाता है। "सामाजिक वस्तुओं को उनके नैतिक मूल्यों के संदर्भ में स्थापित करने का दबाव सामाजिक सिद्धांतकारों के काम को आकार चाहे कुछ भी उनकी तकनीकी भूमिका की तथाकथित अवधारणा हो देता है (देखेंः गॉल्डनर 1970ः 485)।

गॉल्डनर के अनुसार समाजशास्त्री हमें यह बताने में सक्षम नहीं हैं कि वे क्या कर रहे हैं और इसे इस बात से अलग रखने में कि उन्हें क्या करना चाहिए। (रिफ्लेक्टिव) प्रतिवर्त समाजशास्त्र इसलिए चिंतित है कि वे क्या करना चाहते हैं और वास्तव में वे दुनिया में क्या कर रहे हैं। समाजशास्त्र में प्रतिवर्त (रिफ्लेक्टिव) समाजशास्त्र को समाजशास्त्र एक और क्षेत्र माना गया है, लेकिन वह आगे तर्क देते हैं कि ऐसा नहीं है और इसलिए प्रतिवर्त समाजशास्त्र समाजशास्त्रियों को स्वयं की दैनिक जीवन में गहराई से झांकने और नई संवेदनशीलता के साथ उन्हें समृद्ध करने और समाजशास्त्रियों को आत्म जागरूकता के एक नये ऐतिहासिक स्तर बढ़ाने के लिए काम करने का इरादा भी रखता हैं। (पृ. सं. 489)। प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी) एक नई प्रथा, रिवाज, चलन, दस्तूर (प्रैक्सीस) का पूर्वानुमान लगाता है जो स्वयं समाजशास्त्री को बदल देगा। नतीजतन हमारी चेतना हमारे समाजशास्त्रीय कार्यों और सामाजिक स्थिति पर गहराई से प्रतिबिंबित होती है। यह प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी) के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है और गॉल्डनर के अनुसार इस प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी) में सफल होने के लिए उग्र होने की आवश्यकता है क्योंकि दुनिया के ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि समाजशास्त्री अपने/अपने और अपने स्वयं के ज्ञान को समझें। यह भी महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक दुनिया में अपनी स्थिति और अन्य पुरुषों की सामाजिक दुनिया को भी समझे यह मांग करता है कि समाजशास्त्रियों को अपने स्वयं के विश्वासों को वैसे देखना होगा जैसे वे दूसरों द्वारा रखे गए और आयोजित किये गये विश्वासों को देखते हैं और इससे यह परिवर्तन आयेगा कि समाजशास्त्री खुद को और दूसरों को कैसे देख रहे हैं। प्रतिवर्ती (रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी) समाजशास्त्री के स्वयं के परिवर्तन का और बाद में दुनिया में उसके चलन का अनुसरण करती है प्रशंसा करती है। इससे आम आदमी, जो अध्ययन का विषय हैं और समाजशास्त्री, जो अध्ययन करते हैं, के बीच अंतर समाप्त हो जाएगा। लेकिन प्रतिवर्त समाजशास्त्र के अभाव में यह अंतर हमेशा बना रहेगा।

गॉल्डनर का दावा है कि ज्ञाता, ज्ञानी और ज्ञात या ज्ञान के बीच की प्रथकता को दूर किया जाना चाहिए, क्योंकि स्वयं को जाने बिना दूसरों को जानना असंभव होता है। दूसरों को जानने के लिए समाजशास्त्री केवल उनका अध्ययन नहीं कर सकते, लेकिन उन्हें भी सुनना चाहिए और स्वयं का सामना करना चाहिए। प्रतिवर्त (रिफ्लेक्टिव) समाजशास्त्र ज्ञान के अर्थ को बदल देता है। यह केवल जानकारी का मात्र एक टुकड़ा ही नहीं रह जाता बल्कि जागरूकता बन जाता है। गोल्डनर के लिए प्रतिवर्ती (रिफ्लेक्टिव) समाजशास्त्र नैतिक समाजशास्त्र है क्योंकि यह प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र के विपरीत नैतिक और नैतिक प्रतिबद्धता की मांग करती है जो समाजशास्त्री को तटस्थ और राजनीतिक होने की मांग करता है। ''एक प्रतिवर्त समाजशास्त्री (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी), विशेषता यह नहीं है कि यह क्या अध्ययन करता है। यह ना ही व्यक्ति और अध्ययन की गई समस्याओं द्वारा और यहां तक कि उनके अध्ययन में उपयोग की जाने वाली तकनीकों और उपकरणों द्वारा भी विशिष्ट नही स्थापित किया गया है।

बल्कि इसकी एक विशेषता यह है, कि यह उन संबंधों के द्वारा, जो समाजशास्त्री होने के नाते और एक व्यक्ति होने के नाते, भूमिका और कार्यनिष्पादन करने वाले व्यक्ति के बीच रिश्ता स्थापित करता है। एक प्रतिवर्त समाजशास्त्र अलग-अलग विद्वानों की भूमिकाओं के पारंपरिक अवधारणा की समीक्षा का प्रतीक होता है और इसमें एक विकल्प की दृष्टि होती है। इसका उद्देश्य समाजशास्त्री के अपने कार्य से संबंध का रूपांतरण करना है। (देखें: गोल्डनर 1970: 495)

बॉक्स 4.1: सूचना और जागरूकता

प्रतिवर्ती समाजशास्त्र (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी) का उद्देश्य ज्ञान का विस्तार करना है लेकिन ज्ञान को 'सूचना' या 'जागरूकता' के रूप में कैसे समझा गया है, इस वजह से बहुत सी कठिनाइयाँ हैं। ज्ञान के अर्थ में अस्थिर और अनकहे संदेह को उस समय सामाजिक विज्ञान में लाया गया था जब प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान 19वीं शताब्दी में एक दूसरे से भिन्न थे। प्रत्यक्षवादियों ने वास्तविकता के बारे में ज्ञान की कल्पना की, जो जानकारी के रूप में अनुभवजन्य साबित हो सकती है। इसलिए, विज्ञान का लक्ष्य अपने स्वयं के लिए या आसपास की दुनिया में शक्ति में सुधार के लिए जानकारी पैदा करना था। इस तरह से परिकाल्पित विज्ञान एक विचारधारा बन जाता है –

1) "जिसके पीछे और बाद में सभी ''मानवता'' एक" प्रकृति "को वश में करने के लिए एक सामान्य प्रयास में एकजुट हो सकते हैं, जिसे स्पष्ट रूप से मनुष्य के लिए बाहरी माना जाता था और

2) जिसके साथ उन प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना होता है जो सार्वभौमिक को मानव जाति के लिये उपयोगी संसाधन में संपूर्ण रूप में बदल सकते हैं'' (देखें: गोल्डनर 1970: 495)।

ज्ञान के इस विचार से मनुष्य दुनिया के बाकी हिस्सों को नियंत्रित करता है और अपने लाभ और फायदे के लिए संसाधनों का उपयोग करने का अधिकार भी रखता है। जब विज्ञान का उपयोग स्वयं मनुष्यों का अध्ययन करने के लिए किया गया था, मानव जाति की मान्य एवं ग्रहण एकता ने समस्याएं पैदा कीं, क्योंकि यह उनके बीच मतभेदों को सामने लाता था और यह उम्मीद की जाती थी कि सामाजिक विज्ञान का उपयोग पुरुषों को नियंत्रित करने के लिए किया जाएगा क्योंकि भौतिक विज्ञान का उपयोग प्रकृति को नियंत्रित करने के लिए किया गया था। सामाजिक विज्ञान के इस तरह के दृष्टिकोण ने यह अनुमान लगाया कि एक आदमी को किसी भी अन्य चीज़ की तरह जाना जा सकता है, इस्तेमाल किया जा सकता है और उसे नियंत्रित भी किया जा सकता है। भौतिक विज्ञानों का उपयोग ने, एक मॉडल के रूप में सामाजिक विज्ञानों की एक ऐसी धारणा को बढ़ावा दिया है, जो कि एक बढ़ती उपयोगितावादी संस्कृतियों के संदर्भ में वे सभी अधिक से अधिक विकसित हो रहे थे।

प्रत्यक्षवादियों (पोजीटिविस्टों) द्वारा सामाजिक विज्ञान की अवधारणा का निर्माण करने वाली इस जानकारी का उपयोगितावादी संस्कृति की अपनी प्रबल आलोचना के साथ समझ/जानने (वर्स्टेन) की एक अलग विधि द्वारा विरोध किया गया था। इस समझ (Verstehen) ने ऐसे ज्ञान के उत्पादन पर जोर दिया कि उनके नियंत्रण को सुविधाजनक बनाने के बजाए सामाजिक दुनिया में पुरुषों की जागरूकता उनके स्थान के बारे में बढ़ाया जाए। यह दृष्टिकोण सामाजिक दुनिया को साझा किए गए अर्थों के आधार पर बनाया जा रहा है जो पुरुषों के पास है, क्योंकि ''दुनिया का कोई भी ज्ञान ऐसा नहीं है जो हमारे अपने अनुभव का ज्ञान नहीं और इसके साथ हमारे संबंध नहीं है'' (1970: 493)।

जब जागरुकता के रूप में ज्ञान की कल्पना की जाती है, तो चिंता बाहरी वास्त. विकता की सच्चाई की खोज की होती है, बल्कि सच्चाई को जानने वाले के रूप में वास्तविकता को जानने की होती है और इसके साथ अपने अनुभव को क्रमबद्ध करने के लिए ज्ञाता के प्रयास की सच्चाई होती है।'' फिर, जानकारी के रूप में ज्ञान, किसी भी व्यक्ति के बजाय एक संस्कृति का गुण होता है, और परिणाम सभी को व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं।'' दूसरी ओर ज्ञान ''जागरूकता के रूप में, व्यक्तियों की एक विशेषता होती है, भले ही यह विशिष्ट संस्कृतियों में या सामाजिक संरचना के कुछ हिस्सों में इन व्यक्तियों के स्थान से प्रभावित होता है'' (1970: 493–494)।

इसलिए, जागरूकता के लिए व्यक्तियों और सूचनाओं के बीच एक संबंध की आवश्यकता होती है, लेकिन जागरूकता के लिए जानकारी और सूचना एक पर्याप्त स्थिति नहीं होती है। पुरुषों के लिए जानकारी कभी भी तटस्थ नहीं होती है। यह या तो अच्छा होता है या बुरा होता है। जागरूकता बुरी खबरों के लिए एक खुलापन होता है और अपनी स्वीकृति या उपयोग के प्रतिरोध को दूर करने और उस पर काबू पाने के लिए एक क्षमता से पैदा होता है।'' किसी विद्वान की सामाजिक वास्तविकता के बारे में उसके स्वयं के दृष्टिकोण के बारे में प्रतिकूल जानकारी को स्वीकार करने और उसका उपयोग करने की क्षमता और यह जानने का उसका प्रयास को ही आम तौर पर ''वस्तुनिष्ठता या निष्पक्षता'' कहा जाता है'' (1970: 494)।

एक रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी का विरोध करती और प्रत्यक्षवाद में दिखने वाले प्रविधीय द्वैतवाद खारिज करती है और प्रत्यक्षवाद को प्रत्यक्षवाद के रूप में देखती है। यह द्वैतवाद अनुसंधान की और वस्तुओं को उदेश्यों से अलग करता है, तथ्यों को मूल्यों से अलग करता है, सामाजिक दुनिया के ज्ञान को मात्र जानकारी तक कम कर देता है और सामाजिक दुनिया को समाजशास्त्री के कार्यों का ''समाजशास्त्रियों की संज्ञानात्मक प्रतिबद्धताओं के बजाय उनके सभी अन्य हितों के प्रतिबिम्ब रूप में देखता है।'' (1970: 496)। पद्धतिवादी के प्रयोगकर्ताओं को लगता है कि यदि समाजशास्त्री राजनीतिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से अध्ययन की वस्तुओं के साथ जुड़ जाता है तो विषय की वैज्ञानिक प्रकृति लुप्त हो जाएगी। गॉल्डनर का तर्क है कि यह वस्तुनिष्ठता अनिवार्य रूप से समाजशास्त्री की अपने स्वयं के अलगाव की अभिव्यक्ति होती है। ''यह उसे घृणा, दया, क्रोध, अहंकार या नैतिक क्रोध से, उसके जुनून और उसकी रुचि से, इस तर्क पर मुक्त करने का प्रयास करता है कि यह एक रक्तहीन और असम्बद्ध दिमाग है जो सबसे अच्छा काम करता है'' (1970: 496)। हालांकि, गॉल्डनर के अनुसार ''पूछताछ करने वाले विषय और अध्ययन किए गए वस्तु (ऑब्जेक्ट) दोनों को न केवल पारस्परिक रूप से परस्पर संबंधित के रूप में देखा जाता है, बल्कि पारस्परिक रूप से भी गठित किया जाता है'' (1970: 493)।

प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी) का उद्देश्य दूसरों पर से अपने प्रभाव को हटाना नहीं है बल्कि उनके स्वयं के प्रभाव को समझना है "जिसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें स्वयं का अपने बारे में और परिवर्तन के अभिकर्ता (एजेंट) दोनों के रूप में जागरूक होना चाहिए" (पृ. 497)। प्रतिवर्ती समाजशास्त्र (रिफ्लेक्सिव सोशियोलॉजी) यह समर्थन करती है कि "किसी भी सामाजिक प्रणाली में समाजशास्त्रियों के लिए कम से कम दो अर्थों में से स्वायत्तता पर अंकुश लगाने की एक अपरिहार्य प्रवृत्ति होती है: उसे या तो यथास्थिति के विचारक में और अपनी नीतियों के लिए एक समर्थक या तकनीकज्ञ (तकनीशियन) के रूप में अपने हितों के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी हो "(1970: 497–498)।

4.3 गार्फिंकः नृजातीय प्रणाली (एथ्नोमेथोडोलॉजी) के माध्यम से प्रतिवर्तिता

समाजशास्त्र का अध्ययन करने में सबसे महत्वपूर्ण चीजों में एक बात यह है कि आप चीजों को कैसे और किस रूप में देखते हैं। ('स्टीडज़ ऑफ इटनोमैथोडोलॉजी) नृजातीय प्रणाली पुस्तिका में, गार्फिंकेल का उद्देश्य सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा उपयोग की जाने वाली कार्यप्रणाली को समझना था। समाजशास्त्रियों ने व्यवस्था और इसकी व्याख्या में अपनी रुचि दिखायी है, गारफिंकल, हालांकि, इस व्यवस्था से संबद्ध नहीं है। सामाजिक जीवन क्रमबद्ध और नियमित प्रतीत होता है और यह कि सामाजिक क्रिया व्यवस्थित और प्रतिरूपित होती है। समाजशास्त्रियों ने माना है कि सामाजिक व्यवस्था का एक उद्देश्य वस्तुनिष्ठा वास्तविकता को बनाये रखना है नृजातीय प्रणाली के अनुसार, सामाजिक दुनिया एक नैसर्गिक दुनिया होती है जिसमें ज्ञान का एक सामान्य भंडार होता है यह किसी भी व्यक्ति से पहले आता होता है। विषय अपने ज्ञान के इस सामान्य भंडार को अपने लक्ष्यों के अनुरूप बना लेते हैं। तथ्यों का वर्णन करना या व्याख्या करना और दैनिक क्रिया के क्रियात्मक खातों को प्राथमिक आधार माना जाता है, जिस पर सामाजिक दुनिया का फिर से निर्माण होता है (देखेंः टेस्केरिस और कैविविरेसिस, 2008)। गार्फिंकेल के लिए, दुनिया और अस्त-व्यस्त होती है और इस अव्यवस्था के भीतर समाजशास्त्री एक पैटर्न एवं एक व्यवस्था को खोजने और जानने की कोशिश करते हैं। इसलिए इस व्यवस्था की अवधारणा और सामाजिक वैज्ञानिक इस पर कैसे पहुंचे, यह गारफिंकल के लिए महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। या यह संभव है कि जब कोई व्यवस्था ही न है, तो इस सवाल को गार्फिंकेल संबोधित करना चाहते हैं और उठाना चाहते हैं। गार्फिनेल ने तो व्यवस्था को देखना संभव है इस विश्वास को और इस तथ्य को त्याग दिया कि एक वास्तविक या वस्तुनिष्ठ सामाजिक व्यवस्था मौजूद होती है जो इस अवधारणा से आगे बढ़ती है कि सामाजिक जीवन समाज के सदस्यों के लिए व्यवस्थित रूप से प्रकट होता है। यह व्यवस्था सामाजिक जगत की मौलिक प्रकृति के कारण नहीं होती है। सामाजिक व्यवस्था समाज के सदस्यों द्वारा निर्मित होती है।

उनका तर्क है कि समाजशास्त्र ने मनुष्य को खास अंदाज में एक ('कल्चरल डोप') अर्थात सांस्कृतिक रूप से मूर्ख के रूप में चित्रित किया है, जो बिना सोचे-समझे अपने समाज के मानदंडों, मूल्यों और संस्कृति के आधार पर कार्य करता है और समाज की स्थिर विशेषताओं का निर्माण करता है। गार्फिंकल ने समाज में इस 'सांस्कृतिक मूर्ख डोप' की जगह कुशल सदस्य को शामिल किया, जो लगातार स्थितियों के विशेष, अनुक्रमिक गुणों में भाग ले रहे हैं, उन्हें अर्थ देते हैं, उन्हें जानने योग्य बनाते हैं, इस ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाते हैं और भावनाओं एवं व्यवस्थाओं का निर्माण करते हैं। ये, गार्फिंकेल के अनुसार ये सदस्य सामाजिक जगत में, आकार लेने के बजाय अपने स्वयं के सामाजिक दुनिया का निर्माण और पूरा करते हैं।

गार्फिंकेल का विचार था कि किसी भी चीज़ की हमारी समझ व्याख्यात्मक है और जिस तरह से एक सामाजिक वैज्ञानिक काम करता है, यह वह तरीका है जिसमें गली का एक आदमी भी काम करता है। सड़क पर चलने वाले लोगों के बीच अन्तर्क्रिया, संचार के मामले में बहुत कुछ लिया जाता है। ऐसा ही विज्ञान में भी सही महत्व दिये बिना होता है। इसके सही महत्व न जानने की प्रवृत्ति बिना कोई संचार नहीं हो सकता है। जब कोई आपसे पूछता है "आप कैसे हैं?" आप जवाब दें, "मैं ठीक हूं, धन्यवाद," आपकी कुछ भी स्थिति होने के बावजूद। यह टेकन फॉर ग्रांटेड यानि निरर्थक संवाद है। यह मान लिया गया है, व्यक्ति आपकी भलाई के बारे में चिंतित नहीं हो सकता है लेकिन वह पूछता है। यदि दूसरा व्यक्ति पूछे गए प्रश्न के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण लेता है,

तो आप जवाब दे सकते हैं "किसके संबंध में?" तो आप कैसे हैं? सवाल के जवाब में अप्रासंगिक माना जाएगा। सिद्धांत और स्पष्टीकरण का भी यही हाल हैं। किसी अवस्था में प्रश्न ऐसा सवाल अगर पूछा जाए और उत्तर निरर्थक हो जाते हैं और कई बार आप बिना किसी प्रश्न के उत्तर के संतुष्ट हो जाते हैं क्योंकि इसे यू ही मान लिया जाता है, इसलिए आप वास्तविकता को समझने की कोशिश कर रहे हैं।

गार्फिंकल के अनुसार, कोई वास्तविकता नहीं होती है और इस वास्तविकता की खोज करने के लिए आप पैटर्न पर वापस आ जाते हैं जो टेकन फॉर ग्रांटेड यानि यूंही स्वीकार करने के लिए दी गई है। उस वास्तविकता की कोई खोज नहीं की जा सकती है जिसे टेकन फॉर ग्रांटेड यानि ऐसा ही हैं स्वीकार किया नहीं जाता है। प्रतिवर्तिता (रिफ्लेक्सिटी) का अर्थ यही होता है। आप आंकड़ों की तलाश कर रहे हैं लेकिन आंकड़ों के विश्लेषण के लिए आप एक सिद्धांत पर वापस आ जाते हैं। एक नए सिद्धांत पर पहुंचने के लिए एक पुराने सिद्धांत का उपयोग किया जाता है। एक नया कानून या सिद्धांत नहीं बनाया जा रहा है क्योंकि इस नए कानून या सिद्धांत की खोज निश्चित पैटर्न और कानूनों की टेकन फॉर ग्रांटेड यानि ऐसा महत्व हीन की जड़ों में निहित है। यदि इस अवधारणा को सामाजिक व्यवस्था पर लागू किया जाता है, तो व्यवस्था सभी को मान्य हो जाती है। कुछ शर्तों के तहत आप एक व्यवस्था की कुछ छवियों का निर्माण करते हैं। यह आपका निर्माण है, जो महत्व रखता है व्यवस्था के विचार भी जो व्यवस्था है उस उतने ही निर्भर होते हैं जितने उन लोगों पर निर्भर होते हैं जो उस व्यवस्था का निर्माण कर रहे हैं।

गार्फिंकेल का तर्क है कि सदस्य सामाजिक दुनिया के लिए समझ बनाने और उसका हिसाब देने के लिए आलेखीय (डॉक्यूमेंट्री) पद्धति' को लागू करते हैं और इसे आदेश और व्यवस्था का रूप दे देते हैं। इस पद्धति में किसी भी स्थिति या संदर्भ में निहित अनंत संख्यक के लक्षणों के कुछ पहलुओं का चयन करना होता है, उन्हें एक विशेष तरीके से परिभाषित करना और उन्हें एक अंतर्निहित पैटर्न के प्रमाण के रूप में देखना होता है। गार्फिंकल के शब्दों में, डॉक्यूमेंट्री पद्धति में एक वास्तविक स्वरूप को एक पूर्वनिर्धारित अंतनिर्हित पैटर्न को किसी की ओर जो खडा होने (''स्टेंडिंग ऑन बिहैफ ऑफ'') को "इंगित करने के लिए" "एक दस्तावेज (डॉक्यूमेंट) के रूप" में माना जाता है। अंतर्निहित पैटर्न न केवल अपने व्यक्तिगत दस्तावेजी डॉक्यूमेंट्री सबूत से प्राप्त होते हैं, बल्कि व्यक्तिगत दस्तावेजी (डॉक्यूमेंट्री) सबूतों की, अपनी बारी में, अंतर्निहित पैटर्न के बारे में "ज्ञात" के आधार पर व्याख्या की जाती है। प्रत्येक का उपयोग दूसरे की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार (डॉक्यूमेंट्री) आलेखीय पद्धति को प्रतिवर्त के रूप में देखा जा सकता है। गार्फिंकेल का तर्क है कि सामाजिक जीवन अनिवार्य रूप से प्रतिवर्त होता है। समाज के सदस्य अंतर्निहित पैटर्न को निर्धारित करने के लिए गतिविधियों और स्थितियों के पहलुओं का लगातार उल्लेख करते हैं और उनकी अभिव्यक्ति के विशेष उदाहरणों के संदर्भ में उन पैटर्न के अस्तित्व की पुष्टि करते हैं। इस तरह से सदस्य सामाजिक दुनिया के ब्योरों का निर्माण करते हैं जो न केवल समझ में आते हैं और समझाते हैं बल्कि वास्तव में उस दुनिया का गठन भी करते हैं।

नृजाति विज्ञान (एथ्नोमेथोडोलॉजी) के बारे में गार्फिंकेल की चर्चा में, प्रतिवर्तता (रिफ्लेक्सिटी) सतही दिखावा (दस्तावेजों और खातों) और संबंधित अंतर्निहित वास्तविकता (एक जो व्याख्या की दस्तावेजी पद्धति की विशेषता होती है) के बीच अंतरंग निर्भरता को संदर्भित करता है। पहले वाले यानि प्रतिवर्तिता का भाव दस्तावेजों के ज्ञान पर आरेखण द्वारा विस्तृत होता है, जबकि उसी समय बाद वाले का यानि दस्तावेजों अर्थ पहले वाले यानि प्रतिवर्त के बारे में जो ज्ञात होता है, उससे विस्तृत होता है। इस प्रकार खाते उस सेटिंग की निर्माणकारी लक्षण हैं जिन्हें वे अवलोकनीय बनाते हैं। (कांस्टीटयूटिव

रिफ्लेक्सिटी) प्रयोजनार्थक तर्क के सामाजिक विज्ञान के झूठे दावों के लिए उग्र/कट्टर अनुमान होते हैं, क्योंकि यह स्पष्टीकरण पर काफी संदेह पैदा करता है और स्पष्टीकरण में एक्सप्लैंडेंडम को अलग तत्व माना जा सकता है।

प्रतिवर्तिता (रिफ़्लेक्सिबिलिटी) को अक्सर सभी सामाजिक विज्ञान द्वारा सापेक्षतावादी प्रवृत्ति के साथ उत्कीर्ण किया जाता है। किसी विशेष स्थिति पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव के बारे में किसी भी दावे को स्वयं के दावे के संदर्भ में भी समझा जा सकता है। प्रतिवर्तिता का यह पहलू वैज्ञानिक ज्ञान के समाजशास्त्र में काम में विशेष रूप से ध्यान में आता है। जबकि यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है कि प्राकृतिक वैज्ञानिक ज्ञान सामाजिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं की एक उपज/देन उत्पत्ति होती है, बल्कि इस तथ्य पर बहुत कम ध्यान दिया गया है कि सामाजिक विज्ञान स्वयं इन्हीं शक्तियों द्वारा उत्पन्न एक गतिविधि होती है। विज्ञान का समाजशास्त्र वैज्ञानिक ज्ञान पर व्यापक रूप से सापेक्षतावादी शब्दों में ध्यान दिया जाता है, लेकिन अक्सर वास्तविक रूप में अपने स्वयं के रचना शिल्प का अभ्यास करना जारी रखता है। इससे विज्ञान के विशेष रूप से वस्तुवादी दार्शनिकों द्वारा विसंगति की आलोचना होती है। इस दूसरे वाले से अनुशंसित समाधान को सापेक्षतावाद को छोड़ना होता है। इसके विपरीत बहुत सारा काम ऐसा निकल आता है जो विपरीत व्यवहार करता है और विज्ञान के सामाजिक अध्ययन में वास्तविक तरीकों को छोड़ने के तरीकों की खोज करके स्थिरता के सिद्धांत को बढ़ाता है।

4.4. बॉर्डियू: रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी (Bourdieu: Reflexive Sociology)

जब हम मानव व्यवहार के साथ काम कर रहे हैं तो (रिफ्लेक्टिव) प्रतिवर्ता समाजशास्त्र महत्वपूर्ण हो जाता है। बॉर्डियू की राय यह है कि हमें दूसरों की सामाजिक वास्तविकता को बेहतर ढंग से समझने के लिए दुनिया में अपनी स्थिति के बारे में अपनी समझ को और गहरा करने की आवश्यकता होती है। बॉर्डियू एक सजग प्रतिवर्ती समाजशास्त्र के महत्व पर जोर देते हैं जिसमें समाजशास्त्रियों को हर समय अपनी स्थिति के प्रभावों के बारे में सचेत रहते हुये अपने शोधकार्यों का संचालन करना चाहिए, आंतरिक संरचनाओं के अपने स्वयं के सेट पर ध्यान देना चाहिए और इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि कैसे ये सब उनकी वस्तुनिष्ठता को विकृत करने या पूर्वाग्रह ग्रसित करने की संभावना बना देते हैं। एक शोधकर्ता को सामाजिक वास्तविकता के बारे में सोचने के अपने तरीके से बाहर निकलने की जरूरत होती है और उसे अन्य व्यक्तियों की स्थिति में स्वयं को रखने के लिए तैयार होना चाहिए ताकि यह समझा जा सके कि चीजें जिस तरह से हो रही हैं क्यों हो रही है। इसके अलावा, (रिफ्लेक्सिव) प्रतिवर्ति समाजशास्त्र के लिए हमें अपने स्वयं के विचारों के बारे में संदेह करने की आवश्यकता होती है और वास्तव में हम क्या कर रहे हैं, हम कैसा महसूस करते हैं, कैसे सोचते हैं, हमारे दृष्टिकोण और मान्यताओं, मान्यताओं और पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों और सामाजिक वास्तविकता में विशेष चीजों के बारे में क्या है इसकी जांच करे, तो यह हमें स्थिति के हमारे निर्णय के बाहर कदम रखने देता है। बॉर्डियू प्रतिवर्त समाजशास्त्र की निम्नलिखित परिभाषा प्रदान करते हैं:

जहाँ एक प्रयास के रूप में समझा जाने वाला 'सामाजिक विज्ञान इस प्रयास के तहत अपनी वस्तु के लिए खुद को लेने के लिए, अपने स्वयं के उपकरणों का उपयोग खुद को समझने और जांचने के लिए करता है, यह (क्रॉस-कंट्रोल) आर पार के नियंत्रण या प्रतिकूल नियंत्रण को बढ़ाकर और तकनीकी समालोचना करके सत्य को प्राप्त करने की संभावना बढ़ाने का एक विशेष रूप से प्रभावी साधन होता है, जो कि पूर्वाग्रही अनुसंधान

में सक्षम कारकों पर कड़ी निगरानी को संभव बनाता है। यह पूर्ण समग्र ज्ञान के एक नए रूप को आगे बढ़ाने की बात नहीं है, बल्कि ज्ञानवादी विज्ञान संबंधी सतर्कता के एक विशिष्ट रूप के उपयोग करने की बात है, पूर्ण रूप जो इस सतर्कता को एक ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहिए जहां ज्ञानवादी संबंधी बाधाएं सबसे पहले सामाजिक बाधाएं बनती हैं।' (देखेंः बॉर्डियू, 2004ः 89)।

बॉर्डियू (2004) के अनुसार, सामाजिक वैज्ञानिक स्वयं भी अध्ययन के अंतर्गत आने वाली वस्तुएं हैं और समाज की वास्तविकता में भाग ले रहे हैं जो कि उनके अध्ययन का उद्देश्य है। सामाजिक दुनिया में सामाजिक शोधकर्ता का एक स्थान होता है, जो अध्ययन का मुख्य उद्देश्य होता है, और इसलिए उसे शोध की जाने वाली वस्तु और प्रक्रिया दोनों के संबंध में अपने स्वयं के सामाजिक स्थान के बारे में महत्वपूर्ण जागरूकता अपनानी चाहिए। प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी) के उपदेशों के अनुसार, सामाजिक अनुसंधान को उद्देश्य और व्यक्तिपरक सामाजिक कारकों के परस्पर क्रिया के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। प्रतिवर्त समाजशास्त्र (रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी) वस्तुवाद और विषयवाद के विरोधाभास पर काबू पाने पर केंद्रित होती है (देखेंः वाक्क्वेंट, 1998, पृष्ठ 220)। इसे काफी हद तक बॉर्डियू के 'फ़ील्ड', 'कैपिटल', 'हैबिटस' जैसे संवादी सैद्धांतिक निर्माणों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

बॉक्स 4.2ः क्षेत्र फील्ड, कैपिटल और हैबिटस (क्षेत्र-पूंजी)

बॉर्डियू ने सामाजिक जगत को विभिन्न प्रकार के अलग-अलग अखाड़ों या क्षेत्रों में विभाजित किया है, जिनमें से प्रत्येक को नियमों, ज्ञान और पूंजी के रूपों के अपने अनूठे सेट के साथ विभाजित किया गया है। विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों को प्रतिष्ठित किया जा सकता है, उदाहरण के लिए कला, साहित्य, विज्ञान या करियर का क्षेत्र जिसे आगे चलकर उप-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। उसके लिए ये सामाजिक क्षेत्र सूक्ष्म जगत थे, जिसमें अभिकर्ता (एजेंट) और संस्थान एकीकृत होते हैं और एक-दूसरे के साथ क्षेत्र-विशिष्ट नियमों के अनुसार बातचीत करते हैं। नियमों को औपचारिक रूप से लागू नहीं किया गया है, बल्कि प्रकृति में मौन (टैसीट) रखा गया है और उचित प्रथाओं और रणनीतियों को प्रदर्शित करने के लिए एजेंटों द्वारा आंतरिककरण किए जाने की आवश्यकता होती है। क्षेत्र-विशिष्ट नियमों का आंतरिककरण एजेंट को भविष्य की प्रवृत्ति और अवसरों का अनुमान लगाने में सक्षम बनाता है। ऐसा कोई वैश्विक नियम नहीं है जो सभी क्षेत्रों पर लागू होता है। इसलिए, बॉर्डियू (1966) का तर्क है कि उनके अद्वितीय नियमों के कारण, क्षेत्र स्वायत्त होते हैं, जो कि एक क्षेत्र के रूप में सापेक्ष है, जो अन्य सामाजिक संरचनाओं जैसे अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि से प्रभावित हो सकते हैं।

एक सामाजिक क्षेत्र पदों के एक कार्यतंत्र (नेटवर्क) का प्रतिनिधित्व करता है (देखेंः बॉर्डियू, 1972)। सामाजिक क्षेत्रों की सीमाएं भी ऐसी हैं जहां उनका संबंधित प्रभाव समाप्त हो जाता है और जहां दूसरे क्षेत्र के प्रभाव शुरू हो जाते हैं। ये पूर्वपरिभाषित नहीं होता है और इनका अनुभवजन्य रूप से पता लगाना चाहिए। जिस क्षेत्र में एजेंट काम करता है, वह एक स्वयं में स्पष्ट नियम बनाता है जो सामाजिक क्षेत्र के भीतर सामाजिक गतिशीलता की सीमा निर्धारित करता है (देखेंः सामाजिक क्षेत्र, 1972)। यह हमारी जगह की भावना और संभव क्या है और क्या नहीं जैसी भावना बनाता है। फ़ील्ड्स पावर संबंधों के स्थान वे होते हैं जहां एजेंटों के व्यवहार और प्रथाएं मनमानी नहीं होती हैं। एक बार जब यह समझ में आ गया कि सभी इंटरैक्शन एक विशिष्ट सामाजिक क्षेत्र में लंगर डाले हुए हैं, तो अब यह जांच की जानी है कि संबंधित क्षेत्रों के पदों को कैसे प्राप्त किया जाता है।

कैपीटल (पूंजी)

एक आधार के रूप में लेते हुए कि एक सामाजिक क्षेत्र खेल के मैदान का प्रतिनिधित्व करता है जहां कुछ नियम लागू होते हैं (देखेंः बॉर्डियू, 1972), एजेंटों को एक विशिष्ट मात्रा और संसाधनों की संरचना के साथ संपन्न होने की आवश्यकता होती है ताकि वे एक सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त करने के लिए दांव पर लगा सकें। प्रत्येक क्षेत्र विशेष प्रकार के संसाधनों को महत्व देता है जिन्हें बॉर्डियू ने पूंजी (कैपीटल) का नाम दिया है। बॉर्डियू पूंजी के चार प्रकारों अर्थात्, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रतीकात्मक के बीच अंतर करते हैं, जो एजेंट सामाजिक क्षेत्रों में प्रवेश करने और आगे बढ़ने के लिए जुटाते हैं। हालाँकि सभी प्रकार की पूंजी विशिष्ट प्रतीत होती है और पूँजी के सभी प्रकार अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं, वास्तव में, वे एक-दूसरे से बहुत निकट से आपस में जुड़े हुए होते हैं और उन्हें परिवर्तित किया जा सकता है। आर्थिक पूंजी एक व्यक्ति के भाग्य और राजस्व से संबंधित होती है। पूंजी का यह रूप अधिक आसानी से अन्य प्रकार की पूंजी में रूपांतरित हो सकता है। एक उदाहरण के लिए जब आप एक पुस्तक खरीदते हैं तो आप सांस्कृतिक पूंजी खरीदने के लिए आर्थिक पूंजी का आदान-प्रदान करते हैं। सांस्कृतिक पूंजी विशेष रूप से परिवार और शिक्षा द्वारा हस्तांतरित की जाती है और शैक्षिक योग्यता के रूप में संस्थागत हो सकती है। सांस्कृतिक पूंजी सामाजिक क्षेत्र के भीतर स्थिति और सापेक्ष स्थितियों का प्राथमिक कारण होती है। सामाजिक पूंजी को कुलीनता के शीर्षक में संस्थागत किया जा सकता है और इसके निर्माण और रखरखाव के लिए प्रयासों की आवश्यकता होती है। अन्त में, प्रतीकात्मक पूंजी की धारणा सम्मान और मान्यता से संबंधित होती है। यह अपने आप में एक स्वतंत्र प्रकार की पूंजी नहीं होती है, बल्कि एक विशिष्ट क्षेत्र पर सहकर्मी प्रतियोगियों की संपूर्णता से पूंजी की अभिस्वीकृति (acknologement) में समाहित रहती है।

सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश करने के अधिकार के अलावा, पूंजी संरचना के क्षेत्र में एक एजेंट की स्थिति या सामान्य रूप से सामाजिक स्थान भी निर्धारित करती है। बॉर्डियू इस तथ्य पर जोर देते हैं कि सामाजिक क्षेत्रों पर स्थितियां सापेक्ष होती हैं। वे एजेंट के पूंजीगत पोर्टफोलियो की मात्रा और संरचना से निर्धारित होती हैं, जिसकी तुलना, विशेष रूप से आर्थिक और सांस्कृतिक पूंजी के बारे में, उसी क्षेत्र के अन्य एजेंटों से की जाती है, (देखेंः बॉर्डियू और हैबीटस वाक्वांट, 1992)।

बॉर्डियू के समाजशास्त्र में हैबिटस महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है। यह पहले से निर्धारित कार्यक्रम के यांत्रिक अपनाने के रूप में आदत की सामान्य धारणा के लिए गलती नहीं होनी चाहिए। (हैबिटस) सांस्कृतिक पूंजी के भौतिक अवतार को संदर्भित करती हैं जो गहन रूप से घनीभूत आदतों, कौशल, स्वभावों और प्रस्तावों के लिए होती है जो हमारे अंदर जीवन के अनुभवों के कारण होते हैं। यह कला, भोजन और कपड़ों जैसी सांस्कृतिक वस्तुओं के लिए हमारी रुचि तक फैली होती हैं। यह इतिहास के एक उत्पाद के रूप में स्वभाविक प्रणाली होती है जो "इतिहास द्वारा प्रदान की गई योजनाओं के अनुसार प्रथाओं को जन्म देती है" (देखेंः बॉर्डियू, 1984, पृष्ठ 82)। बॉर्डियू की आदत के मूल भाग में हमेशा समान परिस्थितियों में उसी तरह के कार्य करने की प्रवृत्ति होती है। आदत को प्राथमिक और माध्यमिक समाजीकरण के दौरान प्राप्त किया जाता है। प्राथमिक समाजीकरण वह समाजीकरण होता है जो बचपन के दौरान परिवार से आता है। परिणामस्वरूप प्राथमिक आदतें वस्तुतः स्थिर होती हैं। बचपन के दौरान हस्तांतरित की गई कार्यवाही और धारणा की योजनाएं जो बचपन से हस्तांतरित होती है वे एक ऐसी शिक्षा होती है जो सामाजिक क्षेत्र में माता-पिता की सामाजिक स्थिति से

जुड़ी हुई होती हैं। इसलिए, प्राथमिक हैबीटस का अभिप्राय 'बाहरी को आंतरिक बनाने' के बारे में होता है क्योंकि माता-पिता के सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके, जो सामाजिक दायरे में उनकी स्थिति से जुड़े होते हैं, इसलिए बच्चों के स्वयं के आदत में आंतरिक रूप से जुड़े होते हैं। यह वही है जिसे बॉर्डियू (1977) ने वर्ग हैबीटस का नाम दिया है जो समाज में उन विभिन्न पदों को दर्शाता है जो लोगों के पास होते हैं और सामाजिक वर्गों के बीच विभिन्न जीवन शैली के स्वाद और रुचियों की ओर ले जाते हैं।

माध्यमिक हैबीटस प्राथमिक आदत पर निर्मित होती है और विशेष रूप से स्कूल और विश्वविद्यालय में शिक्षा के परिणामस्वरूप आती है, लेकिन दूसरों के जीवन के अनुभवों से भी प्राप्त की जाती है। प्राथमिक हैबीटस अपने प्रभाव को कभी कम नहीं करती है और हमेशा माध्यमिक आदत के विकास को प्रभावित करती है। इस संबंध में, प्राथमिक और माध्यमिक हैबीटस को एक एकल अभिप्राय में संक्षेपित किया जा सकता है जिसे जीवन के अनुभवों द्वारा निरंतर गतिशील रूप से सुदृढ़ और संशोधित किया जाता है। बॉर्डियू (1977, पृ. 72) के अनुसार, हैबीटस ''अपेक्षित, अप्रत्याशित, आकस्मिक और हमेशा बदलती हुई स्थितियों का सामना करने और उनसे निपटने के लिए एजेंटों को सक्षम करने वाली रणनीति बनाने वाले सिद्धांत" के लिए होती हैं।

इसके अलावा, आदत यह सुनिश्चित करती है कि एजेंट विशिष्ट क्षेत्र के नियमों के अनुसार कार्य करें क्योंकि सभी एजेंट ''खेल के दांव और उसके नियमों की व्यावहारिक महारत के मूल्य'' को स्पष्ट रूप से पहचानते हैं (देखेंः बॉर्डियू और वाक्वांट, 1992, पृ.सं. 117)। आदत यह भी सुनिश्चित करती है कि एजेंट खेल के समान उद्देश्य को अपनाते हुए मैदान के भीतर ही स्थिति के लिए प्रतिस्पर्धी हों।

4.5 सारांश (Let Us Sum Up)

इस इकाई में हमने यह समझा है कि प्रतिवर्तिता (रिफ्लेक्सिटी) वह प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा एक शोधकर्ता डेटा के संग्रह और व्याख्या की प्रक्रिया को दर्शाता है और इस शब्द के विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग अर्थ होते हैं। इसे समझने के लिए हमने प्रतिवर्तिता (रिफ्लेक्सिटी) के तीन महत्वपूर्ण सिद्धांतकारों का उल्लेख किया हैः गॉल्डनर, गार्फिंकेल और बॉर्डियू। गोल्डनर ने यह तर्क करते हुए अपनी दलील दी कि ज्ञान ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं था और समाजशास्त्र आंतरिक रूप से उस राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ से बंधा हुआ और जुड़ा हुआ है जिसके भीतर वह मौजूद है। इसलिए, उनके लिए इस संबंध और समाजशास्त्र की भूमिका के बारे में जानकारी होना महत्वपूर्ण था जिस तरह से हम अपने को और अपने भविष्य को देखते हैं।

नृजाति पद्धति (एथ्नोमेथोडोलॉजी) के बारे में गार्फिंकेल की चर्चा में, रिफ्लेक्सिटी सतह के दिखावे (दस्तावेजों और खातों) और संबंधित अंतर्निहित वास्तविकता (अंतर जो व्याख्या की दस्तावेजी पद्धति की विशेषता होती है) के बीच अंतरंग निर्भरता को संदर्भित करता है। पूर्व का भाव उत्तरार्द्ध के ज्ञान पर आरेखण द्वारा विस्तृत होता है, जबकि उसी समय बाद वाले का अर्थ पूर्व के बारे में जो ज्ञात होता है, उससे विस्तृत होता है।

बॉर्डियू के अनुसार, सामाजिक शोधकर्ता सामाजिक दुनिया में एक स्थान रखता है, जो शोध अध्ययन का उद्देश्य होता है, और इसलिए अनुसंधानकर्ता को शोधवस्तु और प्रक्रिया दोनों के संबंध में अपने स्वयं के सामाजिक स्थान के बारे में महत्वपूर्ण जागरूकता अपनानी चाहिए। रिफ्लेक्टिव सोशियोलॉजी की उपदेशों के अनुसार, सामाजिक अनुसंधान को उद्देश्य और व्यक्तिपरक सामाजिक कारकों के परस्पर क्रिया के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।

4.6 शब्दावली (Key Words)

रिफ्लेक्सिटी: यह वह प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा शोधकर्ता डेटा के संग्रह और व्याख्या की प्रक्रिया दर्शाता है।

एथ्नोमेथोडोलॉजी: का अर्थ है लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले तरीकों का अध्ययन। इसका संबंध समाज के सदस्यों द्वारा नियोजित तरीकों और प्रक्रियाओं की जांच करने, उनके सामाजिक संसार के लिए निर्माण करने, उनका लेखा-जोखा रखने और अर्थ देने से होता है।

'कल्चरल डोप': एक मानव-समाजशास्त्री समाज, जो सामान्य संस्कृति प्रदान करने वाली क्रिया के पूर्व-स्थापित और वैध विकल्पों के अनुपालन में अभिनय करके समाज की स्थिर विशेषताओं का निर्माण करता है।

4.7 संदर्भ (References)

Bourdieu, P., (1977), *Outline of a Theory of Practice*,Cambridge University Press, Cambridge.

Bourdieu, P., (1990) *The Logic of Practice*, Polity, Cambridge.

Bourdieu, P. (2004). *Science of Science and Reûexivity*. Stanford University Press, Palo Alto.

Bourdieu, P., Waquant, L., (1992) *An Invitation to Reflexive Sociology*, Polity, Cambridge.

Fries, C.J., (2009). Bourdieu's Reûexive Sociology as a Theoretical Basis for Mixed Methods Research: An Application to Complementary and Alternative Medicine, *Journal of Mixed Methods Research,* Vol. 3 No. 4, October, pp. 326-348.

Kuper, A., Kuper, J., (1996), *The Social Science Encyclopedia*, Routledge, London.

Steinmetz, G., Chae, O. B., (2002), Sociology in an Era of Fragmentation: From the Sociology of Knowledge to the Philosophy of Science, and Back Again. http://criticalrealismnetwork.org/wp-content/uploads/2016/09/Sociology-in-anEra-of-Fragmentation.pdf. Accessed on 06.03.2018.

Tsekeris, C., Katrivesis, N., (2008), *Reflexivity in Sociological Theory and Social Action*, Philosophy, Sociology, Psychology and HIstory, Vol 7, No.1, pp1-12.

कुछ उपयोगी पुस्तकें (Further Reading)

Bourdieu, P. (1977), *Outline of a Theory of Practice*, Cambridge University Press, Cambridge.

Bourdieu, P. (2004). *Science of Science and Reûexivity*. Stanford University Press, Palo Alto.

Bourdieu, P., Waquant, L., (1992) *An Invitation to Reflexive Sociology*, Polity, Cambridge.

Kuper, A., Kuper, J., (1996), *The Social Science Encyclopedia*, Routledge, London.

Steinmetz, G., Chae, O. B., (2002), Sociology in an Era of Fragmentation: From the Sociology of Knowledge to the Philosophy of Science, and Back Again.